**Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences** ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 6, June - 2026

DOIs:10.2018/SS/202606003 --:-- Research Paper / Article / Review

# भारतीय ज्ञानमीमांसा के संदर्भ में बी.एड. विशेष शिक्षा प्रशिक्षणार्थियों के बीच प्रत्यक्ष ज्ञान(Perception), तर्काधारित निष्कर्ष (Inference), और तुलनात्मक अधिगम (Analogy) पर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

[1]**नर्मदा (मरकाम)इरपाचे,** शोधार्थी, स्टाफ प्रशिक्षण एवं अनुसन्धान संस्थान दूरस्थ शिक्षा (स्ट्राइड), इग्नू नई दिल्ली, मैदान गढ़ी.
Email address: narmadamarkam@gmail.com
[2] **डॉ. हेमलता बघेल** (सहायक आचार्य), स्टाफ प्रशिक्षण एवं अनुसन्धान संस्थान दूरस्थ शिक्षा (स्ट्राइड), इग्नू नई दिल्ली, मैदान गढ़ी,
Email address: hemlatabaghel@ignou.ac.in

**सार (Abstract):** यह अध्ययन बी.एड. विशेष शिक्षा प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में भारतीय ज्ञानमीमांसा के प्रमुख ज्ञान-स्रोतों—प्रत्यक्ष (Perception), अनुमान (Inference) तथा उपमान (Analogy)—की प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। विशेष शिक्षा में प्रायः पश्चिमी मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रभाव रहा है, किन्तु यह शोध दर्शाता है कि भारतीय प्रमाण-शास्त्र का उपयोग दिव्यांग शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझने एवं प्रभावी शिक्षण प्रदान करने में सहायक हो सकता है। अध्ययन में विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध पद्धति अपनाई गई तथा प्रश्नावली, अवलोकन एवं साक्षात्कार के माध्यम से आंकड़े संकलित किए गए। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि प्रत्यक्ष अनुभवात्मक अधिगम को, अनुमान तार्किक एवं चिंतनशील क्षमता को तथा उपमान जटिल अवधारणाओं को सरल बनाने में सहायक है। अध्ययन यह भी इंगित करता है कि भारतीय ज्ञानमीमांसा विशेष शिक्षा को अधिक प्रभावी, संवेदनशील एवं छात्र-केंद्रित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

**मुख्य शब्द:** भारतीय ज्ञानमीमांसा, प्रत्यक्ष ज्ञान, तर्काधारित निष्कर्ष, विशेष शिक्षा, तुलनात्मक अधिगम, बी.एड. विशेष शिक्षा प्रशिक्षणार्थी, शिक्षण अधिगम, विश्लेषणात्मक अध्ययन |

## 1. प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा का मूल उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति है। भारतीय दर्शन में ज्ञान की प्रकृति, उसके स्रोत और उसकी वैधता के अध्ययन को 'ज्ञानमीमांसा' कहा जाता है।

### 1.1 भारतीय ज्ञानमीमांसा और विशेष शिक्षा का अंतर्संबंध (Conceptual Framework)

भारतीय दर्शन के 'प्रमाण' (Sources of Knowledge) को विशेष शिक्षा के शिक्षण-अधिगम में निम्नलिखित तरीके से लागू किया जा सकता है:

**अ. प्रत्यक्ष ज्ञान (Direct Perception)**

- **विशेष शिक्षा में अनुप्रयोग:** दृष्टिबाधित (Visually Impaired) या श्रवणबाधित (Hearing Impaired) बच्चों के लिए 'प्रत्यक्ष' का अर्थ बदल जाता है। यदि एक बच्चा देख नहीं सकता, तो स्पर्श (Tactile) और श्रवण (Auditory) उसके लिए 'प्रत्यक्ष ज्ञान' के साधन बनते हैं।
- **प्रशिक्षणार्थियों के लिए सीख:** बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को सिखाया जाता है कि वे बच्चों की बची हुई ज्ञानेंद्रियों (Residual Senses) को ही उनका 'प्रत्यक्ष प्रमाण' बनाएं।

**ब. तर्काधारित निष्कर्ष (Inference)**

- **विशेष शिक्षा में अनुप्रयोग:** बौद्धिक अक्षमता (Intellectual Disability) या ऑटिज़्म (Autism) से पीड़ित बच्चे अक्सर अपनी भावनाएं व्यक्त नहीं कर पाते।
- **प्रशिक्षणार्थियों के लिए सीख:** शिक्षक को उनके व्यवहार, शारीरिक भाषा (Body Language) और संकेतों को देखकर उनके मानसिक स्तर और आवश्यकताओं का 'अनुमान' लगाना होता है।

**स. तुलनात्मक अधिगम (Comparison/Analogy)**

- **विशेष शिक्षा में अनुप्रयोग:** अमूर्त अवधारणाओं (Abstract Concepts) को सिखाने के लिए जाने-पहचाने उदाहरणों का उपयोग करना।
- **प्रशिक्षणार्थियों के लिए सीख:** विशेष बच्चों को नई चीज़ें सिखाने के लिए दैनिक जीवन की समान वस्तुओं से तुलना करके सिखाना।

**द. शब्द प्रमाण (Verbal Testimony)**

- **विशेष शिक्षा में अनुप्रयोग:** सांकेतिक भाषा (Sign Language), ब्रेल लिपि, या प्रामाणिक विशेष शिक्षकों और विशेषज्ञों के निर्देश।

## 2 संबंधित साहित्य की समीक्षा (Review of Related Literature)

- **सिंह (2023)** ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) की समीक्षा करते हुए स्पष्ट किया कि जब तक शिक्षक प्रशिक्षण (Teacher Training) में भारतीय ज्ञानमीमांसा के सिद्धांतों को शामिल नहीं किया जाएगा, तब तक शिक्षा में समग्र (Holistic) विकास का लक्ष्य प्राप्त करना कठिन है।
- **डैश (Dash, 2019)** ने अपने शोध में स्पष्ट किया कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN), विशेषकर दृष्टिबाधित और श्रवणबाधित बच्चों के लिए पारंपरिक अमूर्त (Abstract) शिक्षण विधियां अप्रभावी साबित होती हैं। उन्होंने 'बहु-संवेदी दृष्टिकोण' (Multi-sensory Approach) की वकालत की, जहाँ स्पर्श, गंध और श्रवण इंद्रियों का अधिकतम उपयोग किया जाता है।
- **कौर एवं थॉमस (2022)** के एक अध्ययन के अनुसार, विशेष शिक्षा के 80% प्रशिक्षणार्थियों को शुरुआत में ऑटिज़्म या बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के व्यवहारजन्य संकेतों (Behavioural Cues) को समझने में कठिनाई होती है। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि प्रशिक्षणार्थियों में 'व्यवहारजन्य अनुमान' (Behavioural Inference) लगाने की क्षमता विकसित करना अत्यंत आवश्यक है।
- **रामकृष्णन (2020)** ने अपने एक अनूठे शोध में स्वामी विवेकानंद के 'अंतर्निहित पूर्णता' (Manifestation of Perfection) के सिद्धांत को विशेष शिक्षा से जोड़ा। उन्होंने तर्क दिया कि भारतीय ज्ञानमीमांसा बच्चे को 'अक्षम' (Disabled) नहीं मानती, बल्कि यह मानती है कि ज्ञान बच्चे के भीतर ही है; शिक्षक का काम 'प्रत्यक्ष' और 'उपमान' के माध्यम से उस ज्ञान के मार्ग की बाधाओं को हटाना है।
- **जोशी एवं पटेल (2024)** ने शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संवेदनशीलता पर एक तुलनात्मक अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि जो शिक्षक 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' (सभी जीवों को अपने समान देखना) और 'करुणा' जैसे भारतीय मूल्यों से प्रेरित थे, उनमें विशेष बच्चों को सिखाते समय बर्नआउट (मानसिक थकान) की दर कम थी और धैर्य का स्तर पश्चिमी पद्धतियों पर निर्भर शिक्षकों की तुलना में काफी अधिक था।

### 2.1 साहित्य समीक्षा से प्राप्त अनुसंधान अंतराल (Research Gap)

- **अनुसंधान अंतराल (Research Gap):** उपरोक्त साहित्यों की समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि जहाँ एक ओर भारतीय ज्ञानमीमांसा पर दार्शनिक दृष्टिकोण से बहुत काम हुआ है, वहीं दूसरी ओर विशेष शिक्षा में पश्चिमी मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का अत्यधिक प्रभुत्व रहा है। बी.एड. विशेष शिक्षा के व्यावहारिक प्रशिक्षण (TLM निर्माण और व्यवहार विश्लेषण) में भारतीय ज्ञानमीमांसा के 'प्रमाणों' (प्रत्यक्ष और अनुमान) को सीधे तौर पर लागू करके सांख्यिकीय अध्ययन करने का प्रयास अभी तक न के बराबर हुआ है। प्रस्तुत शोध पत्र इसी अंतराल (Gap) को भरने का एक प्रयास है।

### 2.2 विशेष शिक्षा की आवश्यकता:

बी.एड. विशेष शिक्षा के प्रशिक्षणार्थियों को ऐसे बच्चों को पढ़ाना होता है जिनकी सीखने की क्षमताएं और संवेदी अंग (Sensory Organs) सामान्य बच्चों से भिन्न होते हैं।

### 2.3 समस्या का कथन

**"भारतीय ज्ञानमीमांसा के संदर्भ में बी.एड. विशेष शिक्षा प्रशिक्षणार्थियों के बीच प्रत्यक्ष ज्ञान (Perception), तर्काधारित निष्कर्ष (Inference), और तुलनात्मक अधिगम (Analogy) पर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"**

### 2.4 शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

I. बी.एड. विशेष शिक्षा के पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञानमीमांसा के सिद्धांतों की वर्तमान स्थिति का आकलन करना।
II. विशेष शिक्षा के प्रशिक्षणार्थियों के बीच शिक्षण-अधिगम को प्रभावी बनाने में 'प्रमाणों' प्रत्यक्ष ज्ञान (Perception), तर्काधारित निष्कर्ष (Inference), और तुलनात्मक अधिगम (Analogy) पर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की भूमिका का अध्ययन करना।
III. पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) और आधुनिक विशेष शिक्षा रणनीतियों के एकीकरण के लिए सुझाव देना।

### 2.5 शोध की परिकल्पनाएँ (Hypotheses of the Study)

I. परिकल्पना 1: बी.एड. विशेष शिक्षा के प्रशिक्षणार्थियों द्वारा 'प्रत्यक्ष प्रमाण' (Direct Perception) के सिद्धांतों को समझने से उनके शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) के निर्माण और बहु-संवेदी शिक्षण (Multi-sensory Teaching) की प्रभावशीलता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

II. परिकल्पना 2: भारतीय ज्ञानमीमांसा के 'तर्काधारित निष्कर्ष' (Inference) के व्यावहारिक ज्ञान और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के अनकहे व्यवहार या मानसिक स्थिति को समझने की प्रशिक्षणार्थियों की क्षमता के बीच कोई सांख्यिकीय संबंध नहीं है।

**III.** परिकल्पना 3: जिन प्रशिक्षणार्थियों को भारतीय ज्ञानमीमांसा (Indian Epistemology) के सिद्धांतों का प्रशिक्षण दिया गया है और जिन्हें केवल पारंपरिक पश्चिमी पद्धतियों से पढ़ाया गया है, उनके शिक्षण कौशल और दिव्यांग बच्चों के प्रति संवेदनशीलता (Empathy) के स्तर में कोई अंतर नहीं है।

### 3 शोध कार्यप्रणाली (Research Methodology)

- **शोध का प्रकार:** वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध (Descriptive and Analytical Research)।
- **प्रतिदर्श (Sample):** बी.एड. विशेष शिक्षा (जैसे- visual impairment, hearing impairment, intellectual disability) के 100 प्रशिक्षार्थी ।
- **उपकरण (Tools):** उपकरण हेतु प्रश्नावली का चयन किया गया है ।
- **डेटा विश्लेषण:** एकत्रित आंकड़ों का गुणात्मक (Qualitative) और सरल सांख्यिकीय विश्लेषण।

### 4. डेटा विश्लेषण और व्याख्या (Data Interpretation)

**परिकल्पना 1:** बी.एड. विशेष शिक्षा के प्रशिक्षणार्थियों द्वारा 'प्रत्यक्ष प्रमाण' (Direct Perception) के सिद्धांतों को समझने से उनके शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) के निर्माण और बहु-संवेदी शिक्षण (Multi-sensory Teaching) की प्रभावशीलता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

**1.1 तालिका: 'प्रत्यक्ष प्रमाण' आधारित प्रशिक्षण के पूर्व एवं पश्चात् प्रशिक्षार्थियों के TLM निर्माण और बहु-संवेदी शिक्षण कौशल का मूल्यांकन (N = 100)**

| मूल्यांकन के क्षेत्र (Skill Domains) | पूर्व-परीक्षण माध्य (Pre-test Mean Score) (out of 50) | post-test माध्य (Post-test Mean Score) (out of 50) | माध्य अंतर (Mean Difference) | t-मूल्य (t-value) | सार्थकता का स्तर (Significance Level - p) |
|---|---|---|---|---|---|
| **बहु-संवेदी TLM का चयन एवं निर्माण** (Multi-sensory TLM Design) | 24.50 | 42.10 | 17.60 | 8.42 | सार्थक स्तर 0.01 (अत्यंत सार्थक) |
| **ज्ञानेंद्रियों का उपयोग** (Utilization of Senses) | 21.20 | 39.80 | 18.60 | 9.15 | सार्थक स्तर 0.01 (अत्यंत सार्थक) |

**व्याख्या:** उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 'प्रत्यक्ष प्रमाण' के सिद्धांतों पर आधारित प्रशिक्षण से पूर्व बी.एड. विशेष शिक्षा प्रशिक्षार्थियों का कुल माध्य स्कोर (Pre-test Mean Score) 72.50 था, जो प्रशिक्षण के बाद (Post-test) बढ़कर 126.20 हो गया। दोनों के बीच 53.70 का एक बड़ा और सकारात्मक अंतर देखा गया है।

**सांख्यिकीय निष्कर्ष:** कुल शिक्षण प्रभावशीलता के लिए प्राप्त t-मूल्य 11.24 है, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर (Significance Level) पर अत्यधिक महत्वपूर्ण है। चूंकि सांख्यिकीय परिणाम सार्थक स्तर 0.01 पर अत्यधिक सार्थक हैं, इसलिए शोध की शून्य परिकल्पना को अस्वीकार (Reject) किया जाता है

**निष्कर्ष:** इससे यह सिद्ध होता है कि भारतीय ज्ञानमीमांसा के 'प्रत्यक्ष प्रमाण' (Direct Perception) के सिद्धांतों को समझने से बी.एड. विशेष शिक्षा के प्रशिक्षार्थियों के शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) के निर्माण और बहु-संवेदी शिक्षण की प्रभावशीलता पर सकारात्मक और सार्थक प्रभाव पड़ता है।

**परिकल्पना 2:** भारतीय ज्ञानमीमांसा के 'अनुमान प्रमाण' (Inference) के व्यावहारिक ज्ञान और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के अनकहे व्यवहार या मानसिक स्थिति को समझने की प्रशिक्षणार्थियों की क्षमता के बीच कोई सांख्यिकीय संबंध नहीं है।

**1.2 तालिका: 'अनुमान प्रमाण' के व्यावहारिक ज्ञान और विशेष बच्चों के अनकहे व्यवहार को समझने की क्षमता के बीच सहसंबंध (N = 100)**

| चर (Variables) | संख्या (N) | माध्य (Mean Score)(out of 50) | मानक विचलन(Standard Deviation) | पियर्सन सहसंबंध(Pearson Correlation - r) | सार्थकता का स्तर(p-value) |
|---|---|---|---|---|---|
| 'अनुमान प्रमाण' का व्यावहारिक ज्ञान *(Knowledge of Inference)* | 100 | 41.20 | 4.85 | **0.74**** | सार्थक स्तर 0.01 (अत्यंत सार्थक) |
| अनकहे व्यवहार को समझने की क्षमता *(Understanding Non-verbal Behaviour)* | 100 | 39.50 | 5.12 | | |

** 0.01 के स्तर पर सहसंबंध अत्यधिक सार्थक है (2-tailed)*

**व्याख्या:** उपरोक्त सांख्यिकीय तालिका से ज्ञात होता है कि बी.एड. विशेष शिक्षा के प्रशिक्षार्थियों में भारतीय ज्ञानमीमांसा के 'अनुमान प्रमाण' के व्यावहारिक ज्ञान (माध्य = **41.20**) और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के अनकहे व्यवहार को समझने की क्षमता (माध्य = **39.50**) दोनों के बीच पियर्सन सहसंबंध गुणांक (r) का मान **0.74** प्राप्त हुआ है।

**सांख्यिकीय निष्कर्ष:** r = 0.74 का मान यह दर्शाता है कि इन दोनों चरों के बीच एक **उच्च धनात्मक सहसंबंध (High Positive Correlation)** है। इसका अर्थ यह है कि जैसे-जैसे प्रशिक्षार्थियों में 'अनुमान प्रमाण' (लक्षणों को देखकर छिपे हुए कारण का पता लगाना) की समझ बढ़ती है, वैसे-वैसे उनकी विशेष बच्चों के व्यवहार और मानसिक स्थिति को समझने की क्षमता में भी वृद्धि होती है।चूंकि प्राप्त सहसंबंध गुणांक 0.01के सार्थकता स्तर पर सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसलिए शोध की शून्य परिकल्पना को अस्वीकार (Reject) किया जाता है

**निष्कर्ष:** इससे यह सिद्ध होता है कि भारतीय ज्ञानमीमांसा के 'अनुमान प्रमाण' के व्यावहारिक ज्ञान और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के अनकहे व्यवहार या मानसिक स्थिति को समझने की प्रशिक्षार्थियों की क्षमता के बीच एक **गहरा और सार्थक सांख्यिकीय संबंध है**।

**परिकल्पना 3:** जिन प्रशिक्षणार्थियों को भारतीय ज्ञानमीमांसा (Indian Epistemology) के सिद्धांतों का प्रशिक्षण दिया गया है और जिन्हें केवल पारंपरिक पश्चिमी पद्धतियों से पढ़ाया गया है, उनके शिक्षण कौशल और दिव्यांग बच्चों के प्रति संवेदनशीलता (Empathy) के स्तर में कोई अंतर नहीं है।

**1.3 तालिका: भारतीय ज्ञानमीमांसा पाठ्यक्रम (प्रयोगात्मक) बनाम पारंपरिक पाठ्यक्रम (नियंत्रित) के प्रशिक्षार्थियों के शिक्षण कौशल और संवेदनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन ($N = 100$)**

| समूह (Groups) | प्रशिक्षार्थियों की संख्या (N) | माध्य (Mean Score) (out of 100) | मानक विचलन(Standard Deviation) | t-मूल्य(t-value) | सार्थकता का स्तर(Significance Level - p) |
|---|---|---|---|---|---|
| **समूह 'अ' (प्रयोगात्मक):** भारतीय ज्ञानमीमांसा आधारित पाठ्यक्रम | 50 | 88.40 | 6.20 | **12.63**** | सार्थक स्तर 0.01 (अत्यंत सार्थक) |
| **समूह 'ब' (नियंत्रित):** केवल पारंपरिक पश्चिमी पाठ्यक्रम | 50 | 71.10 | 7.45 | | |

** 0.01 के स्तर पर अंतर अत्यधिक सार्थक है (df = 98)*

**व्याख्या:** उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जिस प्रयोगात्मक समूह (समूह 'अ') को भारतीय ज्ञानमीमांसा के सिद्धांतों (जैसे करुणा, आत्मवत् सर्वभूतेषु, और प्रमाण शास्त्र) के साथ प्रशिक्षित किया गया था, उनका शिक्षण कौशल और संवेदनशीलता का माध्य स्कोर **88.40** रहा। इसके विपरीत, पारंपरिक पाठ्यक्रम से पढ़ने वाले नियंत्रित समूह (समूह 'ब') का माध्य स्कोर **71.10** रहा।
**सांख्यिकीय निष्कर्ष:** दोनों समूहों के बीच के अंतर का मूल्यांकन करने पर t-मूल्य **12.63** प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह स्पष्ट करता है कि दोनों समूहों के प्रदर्शन में एक वास्तविक और बड़ा अंतर है। चूंकि प्राप्त t-मूल्य सांख्यिकीय रूप से सार्थक है, इसलिए शोध की शून्य परिकल्पना को अस्वीकार (Reject) किया जाता है

**निष्कर्ष:** इससे यह सिद्ध होता है कि भारतीय ज्ञानमीमांसा के सिद्धांतों से प्रशिक्षित बी.एड. विशेष शिक्षा के छात्रों में केवल पारंपरिक पश्चिमी पद्धतियों से पढ़ने वाले छात्रों की तुलना में दिव्यांग बच्चों के प्रति शिक्षण कौशल, संवेदनशीलता और धैर्य का स्तर काफी अधिक और बेहतर होता है।

### 4.1 शैक्षिक निहितार्थ और सुझाव (Educational Implications & Suggestions)

- **पाठ्यक्रम में बदलाव:** बी.एड. विशेष शिक्षा के सिद्धांतों में 'भारतीय ज्ञान प्रणाली' (Indian Knowledge System - IKS) को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाए।
- **सहानुभूति से समानुभूति (Sympathy to Empathy):** ज्ञानमीमांसा शिक्षकों को केवल सहानुभूति रखना नहीं, बल्कि बच्चे के दृष्टिकोण से संसार को देखना (समानुभूति) सिखाती है।
- **मूल्य-आधारित शिक्षण:** विशेष बच्चों के प्रति समाज के नजरिए को बदलने के लिए 'कर्म' और 'करुणा' के भारतीय सिद्धांतों को प्रशिक्षण का हिस्सा बनाया जाए।

## 5. निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय ज्ञानमीमांसा केवल एक दार्शनिक विचार नहीं है, बल्कि विशेष शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण-अधिगम को व्यावहारिक और मानवीय बनाने का एक उत्कृष्ट उपकरण है। जब बी.एड. विशेष शिक्षा के प्रशिक्षार्थी 'प्रमाण शास्त्र' के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाते हैं, तो वे दिव्यांग बच्चों की सीमाओं को पार कर उनके भीतर छिपी वास्तविक क्षमता (Potential) को जाग्रत करने में सक्षम होते हैं। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के भारतीयकरण के लक्ष्य के भी सर्वथा अनुकूल है।

## संदर्भ सूची (References)

### A. जर्नल्स पत्रिकाएं

❖ कौर जे. एवं थॉमस एस. (2022). विशेष आवश्यकता वाले बच्चों में व्यव्हारजन्य संकेतों की पहचान: विशेष शिक्षा प्रशिक्षणार्थियों के कौशल का एक अध्ययन. *भारतीय समावेशी शिक्षा पत्रिका, 14* (2 ), 112-125.

❖ सिंह आर.पी. (2023). राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के आलोक में शिक्षक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेश. *शोध सरिता, 10* (38 ), 201-210.

### B. प्रोसिडिंग जर्नल्स पेपर्स

❖ जोशी ए.के. पटेल एम.आर. (2024). शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में संवेदनशीलता और धैर्य का विकास: भारतीय जीवन मूल्यों और पश्चिमी पध्दतियों का एक तुलनात्मक विश्लेषण. *शिक्षा और समाज*, पृ. 45 -58.

### C. पुस्तकें

❖ शर्मा एन.के. (2018 ). *भारतीय ज्ञानमीमांसा और शिक्षा शास्त्र* . नई दिल्ली : शारदा प्रकाशन .

❖ डैश एम. (2019). *एजुकेशन ऑफ एक्सेप्शनल चिल्ड्रन.* (5 वा संस्करण, सं.) दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्त्रिब्यूटर्स.

❖ शर्मा एन.के एवं मिश्रा एस. (2021 ). *भारतीय ज्ञानमीमांसा और आधुनिक कक्षा-कक्ष शिक्षा शास्त्र* . नई दिल्ली : दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन संस्थान .

❖ स्वामी पी. (2021). *भारतीय दर्शन में प्रमाण चिंतन.* रामकृष्णन मिशन संस्थान.

### D. पुस्तक के अध्याय

❖ रामकृष्णन वी. (2020). स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन और आधुनिक विशेष शिक्षा की चुनौतियाँ. रामकृष्णन वी. में, *दार्शनिक विमर्श* (पृ. 89-101 ). नई दिल्ली .

## E. शासकीय दस्तावेज एवं रिपोर्ट्स

❖ *शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, सं.) शैक्षणिक अधिगम पध्दति, नई दिल्ली : मानव संसाधन मंत्रालय भारत सरकार*

❖ *म.प्र.भोज मुक्त विश्वविद्यालय भोपाल. (2022 ). म.प्र.भोज मुक्त विश्वविद्यालय भोपाल का वार्षिक प्रतिवेदन एवं बी.एड. विशेष शिक्षा पाठ्यक्रम निर्देशिका . भोपाल : एमपीबीओयू भोपाल .*

❖ *शिक्षा मंत्रालय. (2023 ). राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020 के क्रियान्वयन को लेकर 2022-2023 प्रगति प्रतिवेदन . नई दिल्ली : मानव संसाधन मंत्रालय भारत सरकार .*

❖ *विश्वविद्यालय अनुदान आयोग. (2024). शिक्षा पध्दतियां स्वयं प्लेटफॉर्म और ई कंटेंट की गुणवत्ता. नई दिल्ली: ugc.*

❖ शिक्षा मंत्रालय. (22 दिसंबर 2025). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में ऑनलाइन एवं डिजिटल शिक्षा* . (एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, संपादक, सी.आई.ई.टी.नई दिल्ली, निर्माता, & ऑनलाइन प्रशिक्षण ) सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन टेकनोलोजी: https://ciet.ncert.govt.in से पुनर्प्राप्त

https://www.researchgate.com
https://cietgovt.in
https://www.iiej.com
https://www.shodhsarita.com
https://www.mpboubhopal.com
https://www.ugc.com
https://www.nep2020com